एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अधिक आय के लिए ग्लैडियोलस की खेती

(राजकुमार जाट, *मोहन लाल जाट एवं जीतेन्द्र शिवरान)
गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रोद्योगिकि विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखंड
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mljat9887@gmail.com

विश्व में व्यवसायिक स्तर पर उगाये जाने वाले कर्तित पुष्पों मे ग्लैडियोलस का महत्वपूर्ण स्थान है । ग्लैडियोलस, इरिडेसी कुल का पौधा है। इसकी उत्पत्ति मैक्सिको मे हुई है। इसके पुष्प डंडियों (स्पाइक) में आते हैं। ग्लैडियोलस शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द ग्लैडियस से हुई है, जिसका अर्थ ''तलवार'' है, क्योंकि ग्लैडियोलस की पत्तियाँ तलवार जैसी होती है। अतः इसे 'सोर्ड लिली' भी कहते हैं।

आजकल पुष्प उत्पादन की ओर भारतीय कृषकों का ध्यान अधिक जा रहा है। इसका मुख्य कारण फूलों की बढ़ती उपयोगिता, जिसके कारण विश्वस्तर पर विभिन्न प्रकार के पुष्पों की माँग बढ़ गयी है। इन्हीं पुष्पों में ग्लैडियोलस का प्रमुख स्थान है। इसकी खेती भारतवर्ष में की जा रही है। मध्यप्रदेश के इन्दौर, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर, होशंगाबाद आदि शहरो में इसकी खेती किसानो की बीच काफी लोकप्रिय हो रही है।

भूमि एवं जलवायु

भूमि में कार्बनिक तत्वों की प्रचुरता हो इसकी सफल खेती के लिए जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी, थोड़ी अम्लीय जिसका पी0एच0 मान 5.5 और 6.5 के बीच हो उपयुक्त है। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ग्लैडियोलस की खेती के लिए खुली धूप वाली जगह होनी चाहिए। उचित वृद्धि एवं निकास हेतु जहा पर्याप्त मात्रा में घूप मिलती हो तथा तापमान 16–28 डिग्री सेल्सियस रहता हो वहा इसकी खेती करनी चाहिए । इसकी अच्छी वृद्धि के लिए 28^0–30^0 सेल्सियस तापमान उत्तम रहता है। इससे अधिक तापमान होने पर पौधे की बढ़वार प्रभावित होती है तथा फूलों की गुणवत्ता पर भी प्रभाव पड़ता है।

प्रजातियाँ/किस्में

लाल : अमेरिकन ब्यूटी, आस्कर, मैलोडी, पूसा सुहानिग, मनोहर, सदाबहार
गुलाबी : सुचित्रा, फेडेलियो, पिंक फ्रैन्डशिप, समर पर्ल, सुनयना, शोभा।
ओरेन्ज : रोज सुप्रीम, सेन्सेरे, अंजली, वंदना, हटिंग साम्य
बैगनी : किगंलियर, कापर किंग, हरमैजेस्टी, मयूर।
पीली : नोबालक्स, टोपाज, जैस्टर, विक्स ग्लोरी, सनसाइन, टापब्रास, अर्का गंगा, अर्का कावेरी, जेटस्टर, येलो स्टोन, स्वेता, धन्वन्तरी, बिदिया ।
सफेद : शुभांगिनी, अमेरिकन व्हाइट, अप्सरा, व्हाइट फ्रैन्डशिप, व्हाइट प्रास्पेरिटी, व्हाईट गोल्डन, व्हाईट फ्रैन्डशिप, व्हाईट योक ।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा–

प्रकार	प्रति हैक्टेअर
गोबर की खाद	400–500 कु.
नत्रजन	250–300 किग्रा.
फास्फोरस	200 – 250 किग्रा.
पोटाश	200 किग्रा.

खेत की तैयारी करते समय गोबर की सड़ी हुई खाद मिला देते हैं, जबकि नत्रजन की 1/3 मात्रा फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा खेत में अन्तिम जुलाई के समय मिलाना चाहिए। तीन पत्तियाँ आने पर नत्रजन की 1/3 मात्रा तथा शेष 1/3 पत्तियाँ आ जाने पर डालनी चाहिए। 4–5 पत्तियाँ आ जाने पर, 2 ग्राम यूरिया प्रतिलीटर पानी में घोलकर प्रत्येक 15 दिन के अन्तर पर द्दिड़काव करने से पुष्प स्पाइक अच्द्दे गुणवत्ता वाले प्राप्त होते हैं।

कंदों (कार्म्स) की बुवाई

ग्लैडियोलस में पुष्पों की अच्छी पैदावार के लिए 4.0–4.5 सेमी. या इससे अधिक व्यास के कन्दों का चुनाव करना चाहिए। कन्दों की आपसी दूरी 20 सेमी. एवं कतार से कतार की दूरी 30 सेमी. होनी चाहिए। कन्दों को उनके आकार के अनुसार 5–8 सेमी. गहराई पर बोते हैं।

कंदों की सुषुप्तावस्था– कन्द व घनकन्दों की खुदाई के उपरांत तुरन्त बुवाई करने पर अंकुरित नहीं होते तथा लगभग 16–17 सप्ताह तक सुषुप्तावस्था में रहते है। क्योंकि उनके अन्दर वृद्धि अवरोधक पदार्थ जैसे एबसिसिक एसिड एवं फिलोलिक ग्रुप रहते है। सुषुप्तावस्था दूर करने के लिए 200 पीपीएम केन्जीलेडेनिन घोल में 24 घंटे व तीन दिन बाद कन्दों को 100 पीपीएम जिब्रेलिक एसिड के घोल में 24 घंटे डुबोकर रखने पर सुषुप्तावस्था दूर हो जाती है।

सिंचाई

ग्लैडियोलस में सिंचाई की अवधि क्षेत्र की जलवायु, मिट्टी का प्रकार और वर्षा पर निर्भर करती है। पतझड़ एवं बंसत ऋतु में 10 दिन के अन्तराल पर, जाड़े में 15 दिन के अन्तराल पर तथा ग्रीष्म ऋतु में 5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। स्पाइक बनने के समय सिंचाई आवश्यक होती है।

कन्द रोपण एवं फूल आने का समय

क्षेत्र	रोपाई का समय	फूलने का समय
मैंदानी क्षेत्र	अक्टूबर–नवंबर	दिसंबर–मार्च
मध्यम ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्र	फरवरी–मार्च	अप्रैल–जून
ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र	अप्रैल–मई	जुलाई–अक्टूबर

निराई, गुडाई एवं मिट्टी चढ़ाना–

ग्लैउियोलस की फसल मे खरपतवार नियंत्रण हेतु नियमित निराई, गुडाई करनी चाहिए । जब पौधे 25–30 सेमी. उचे हो जाये तो उस समय 10–15 सेमी. तक दोनो तरफ मिट्टी चढ़ाकर मेड बना देना चाहिए । ताकि पौधे तेज हवा तथा स्पाईक के वजन से न गिर जाये ।

पुष्प डंडियों की कटाई –

ग्लैडियोलस के पुष्प डंडियों को काटते समय निम्न बातें ध्यान में रखना चाहिए।

- स्थानीय बाजार के लिए फूलों की डंडियों को उस समय काटना चाहिए जब निचली पखुंड़ी खिल जाएं तथा दूर की मंडियों के लिए जब सबसे निचली पंखुड़ी केवल रंग दिखाए तब काट लेना चाहिए।
- केवल सुबह या शाम जब धूप नही हो फूलो को काटना चाहिए।
- स्पाइक काटने के लिए तेज धार वाला चाकू प्रयोग करना चाहिए।
- स्पाइक को काटने के उपरान्त इन्हे सीधा ही पानी से भरे बाल्टियों में तुरन्त रख देना चाहिए।

ग्रेडिंग

ग्रेड	स्पाइक की लम्बाई से0मी0	प्रति स्पाइक फूलों की संख्या
फैन्सी	107 से अधिक	16
स्पेशल	96–107	15
स्टैण्डर्ड	81–96	12
युटिलिटी	81 से कम	10

कन्दों (कार्म्स) की खुदायी एवं भण्डारण –

पुष्पन के 55–65 दिन पश्चात् घन कन्द 25–50 प्रतिशत पीले से भूरे रंग के होने लगे तब खुदाई करनी चाहिए । जिससे अगली फसल में अच्छे गुणों वाले पुष्प प्राप्त होते है। खुदाई में देरी करने से घन कन्दों मे विगलन रोग का प्रकोप बढ़ने लगता है। घन कन्दों को खुदाई उपरांत अच्छी तरह साफ करके फफूदनाशी बाविस्टीन या केप्टान दवा के घोल से 20–30 मिनट तक डुबोकर व निकालकर छायादार स्थान पर सुखाकर नीचे की तरफ जाली वाली लकडी की पेडियों या प्लास्टीक क्रेटस में 5–10 सेल्सीयस तापमान व 50–60 प्रतिशत आपेक्षिक आर्द्रता पर शीतग्रह में भण्डारित करते है।

उपज

उत्पाद	प्रति हैक्टर
फूलों की उपज	300000 स्पाइक
कन्दों की उपज	300000 कन्द
लघु कन्दों की उपज	625–660 कि.ग्रा.

प्रमुख रोग कीट

फ्युजेरियम राट–यह ग्लैडियोलस की एक प्रमुख बीमारी है । यह बीमारी कन्दों के माध्यम से फैलती है इस रोग में पत्तियाँ ऊपरी भाग से पीली पड़ने लगती है तथा बाद में तना भी पीला पड़ जाता है तथा पौधा सूखने लगता है। लक्षण दिखाई देने पर कारवेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत), थीरम (0.3 प्रतिशत), विनोमिल (0.1 प्रतिशत) अथवा कैप्टान (0.3 प्रतिशत) के घोल से मिट्टी को उपचारित करने से रोग कम लगता है।

कन्द सड़न भण्डारण के समय कन्दों पर फफूंद से काले धब्बे पड़ जाते हैं जिससे पत्ते पीले पड़ जाते हैं और फूलों के स्पाइक भी छोटे आकार के बनते हैं। भण्डारण के समय कन्दो को बाहरी चोट से बचायें। बुवाई से पूर्व कन्दो को कारवेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) अथवा बोर्डोमिक्चर (4:4:50) से उपचारित करें।

थ्रीप्स– ये कीट पत्तियों का रस चूसकर इनको कमजोर बनाते है। इमिडाक्लोरप्रिड से बीच उपचार करना चाहिए । खडी फसल में डायमिथोएट 30 ई.सी. 2–2.5 मिली./ली. पानी का छिड़काव करना चाहिए ।

माईट– केलयेन 1 ग्राम/ली. या थायोडान 2 एमएल/ली. के छिड़काव से इस कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।